भारत के उत्तर पूर्व तट पर कच्छप नीड़न की गहनता

लवसन एल. एडवेर्ड[1]*, प्रलय रंजन बेहरा[1], सुरेश कुमार पी.[1], प्रभाकर आर. वी. डी.[1], शुभदीप घोष[1] और डॉ. वी. कृपा[2]

[1]भा कृ अनु प – केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र, विशाखपट्टणम, आंध्रा प्रदेश

[2]सदस्य सचिव, तटीय जलजीव पालन प्राधिकरण, चेन्नई

ई–मेल :- loveson_edward@yahoo.co.in

सारांश

भारत के आन्ध्रा प्रदेश, ओड़ीषा और पश्चिम बंगाल सहित उत्तर पूर्व तट से कच्छप नीड़न पर आंकड़े आकलित किए गए। वर्ष अक्तूबर से नवंबर, 2018 तक की अवधि के दौरान विस्तृत सूचना आकलित करने के लिए द्रुत सर्वेक्षण आयोजित किया गया। सर्वेक्षण के ज़रिए प्रजाति, मौसम और कच्छपों की औसत संख्या से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। भारत के उत्तर पूर्व तट पर कच्छप नीड़न की गहनता का विश्लेषण करने के लिए इस आंकड़े का उपयोग किया गया । पांच प्रजातियों में से (ओलिव रांइडली, ग्रीन हाक्सबिल, लेथर बैक कच्छप और लोगरहेड कच्छप) ओलिव रांइडली कच्छपों का नीड़न केवल इस तट पर रिपोर्ट किया गया। अध्ययन का परिणाम यह सूचित करता है कि ओड़ीषा तट पर नीड़न की गहनता अपेक्षाकृत अधिक है। आन्ध्रा प्रदेश में कहीं-कहीं नीड़न की रिपोर्ट की गयी। पश्चिम बंगाल से कच्छप नीड़न की रिपोर्टें कम थीं। इस तट के विविध भागों में दिसंबर से अप्रैल महीने के दौरान नीड़न मौसम परिवर्तित रहते हैं।

मुख्य शब्द: नीड़नः nesting, प्रजातियां: species, प्रबलता: intensity, मौसम: season

आमुख

भारत के तटीय समुद्र में समुद्री कच्छपों की पांच प्रजातियां जैसे कि ओलिव राइडली कच्छप (*लेपिड़ोचेलिस ओलिवेसिया*), लोगरहेड कच्छप (करेटा करेटा), लेथर बैक कच्छप (*डेरमोचेलिस कोरियासिया*), हाक्सबिल कच्छप (*एरेटमोचेलिस इम्ब्रिकाटा*) और ग्रीन कच्छप (*चेलोनिया मिड़ास*) बसती हैं। इनमें से भारतीय समुद्र में सबसे अधिक पायी जानेवाली प्रजाति ओलिव राइडली है जो विश्व में प्रचुर मात्रा में पाए जानेवाला समुद्री कच्छप माना जाता है। यह चिंता की बात है कि ओलिव रैडली कच्छप कमज़ोर है और विविध अंतर्राष्ट्रीय करारों के अनुसार संरक्षित है। भारत सरकार ने समुद्री कच्छपों के परिरक्षण हेतु प्रधानता दी है और पांच प्रजातियों को भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 के अनुसूची । के अनुसार संरक्षण दिया है। हिंदु पौराणिक कथाओं के अनुसार समुद्री कच्छपों को देवता माना जाता है और गलती से पकडे गए कच्छपों को स्थानीय मछुआरों द्वारा समुद्र में छोड़ दिया जाता है। भारतीय समुद्र में समुद्री कच्छपों के संरक्षण एवं परिरक्षण के लिए निरंतर निगरानी की ज़रूरत है और इनके नीड़न की गहनता और नीड़न स्थानों के बारे में व्यापक अध्ययन करने की आवश्यकता है।

सामग्रियाँ और तरीके

भारत का उत्तर पूर्व तट तीन समुद्रवर्ती राज्यों, जोकि पश्चिम बंगाल (158 कि.मी.), ओड़ीषा (480 कि.मी.) और आन्ध्रा प्रदेश (974 कि.मी.) से सम्मिलित है, की कुल तटरेखा 1612 कि.मी. है। कच्छपों की नीड़न गहनता (प्रति वर्ष नीड़न के लिए पहुंचनेवाले कच्छपों की औसत संख्या)पर आन्ध्रा प्रदेश, ओड़ीषा और पश्चिम बंगाल सहित भारत के उत्तर पूर्वी तट से आंकड़ा आकलित किया गया। अक्तूबर से नवंबर, 2018 महीने के दौरान सूचना आकलित करने के लिए द्रुत सर्वेक्षण आयोजित किया गया। विविध संगठनों की रिपोर्टों से प्राप्त सूचना और पूर्व प्रकाशित अभिलेखों की जांच के ज़रिए प्रजाति, मौसम और कच्छपों की औसत संख्या से संबंधित विवरण प्राप्त किया गया। यह आंकड़ा भारत के उत्तर पूर्वी तट के किनारे कच्छप नीड़न की गहनता को विश्लेषित करने के लिए उपयोग किया गया।

परिणाम एवं चर्चा

आन्ध्रा प्रदेश

आन्ध्रा प्रदेश के समुद्र तट पर समुद्री कच्छपों की चार प्रजातियाँ जैसा कि ओलिव राइडली कच्छप (*लेपिड़ोचेलिस ओलिवेसिया*), लेथरबैक कच्छप (*डेरमोचेलिस कोरियासिया*), हाक्सबिल कच्छप (*एरेटमोचेलिस इम्ब्रिकाटा*) और ग्रीन कच्छप (*चेलोनिया मिड़ास*) बसती हैं। आन्ध्रा प्रदेश का तट ओलिव राइडली कच्छपों के लिए कहीं-कहीं नीड़न का आवास स्थान है जिसे तेलेगु में "समुद्रम तबेलु" कहा जाता है। यह प्रजाति पश्चिम आन्ध्रा प्रदेश के तीन जिलाओं, जो कि श्रीकाकुलम, विज़ियनगरम और विशाखपट्टणम सहित समुद्र तट पर नीड़न करती है। आन्ध्रा प्रदेश के समुद्र तट पर करीब 16 स्थानों में दिसंबर से अप्रैल महीने के दौरान ओलिव राइडली कच्छपों का कहीं-कहीं नीड़न,

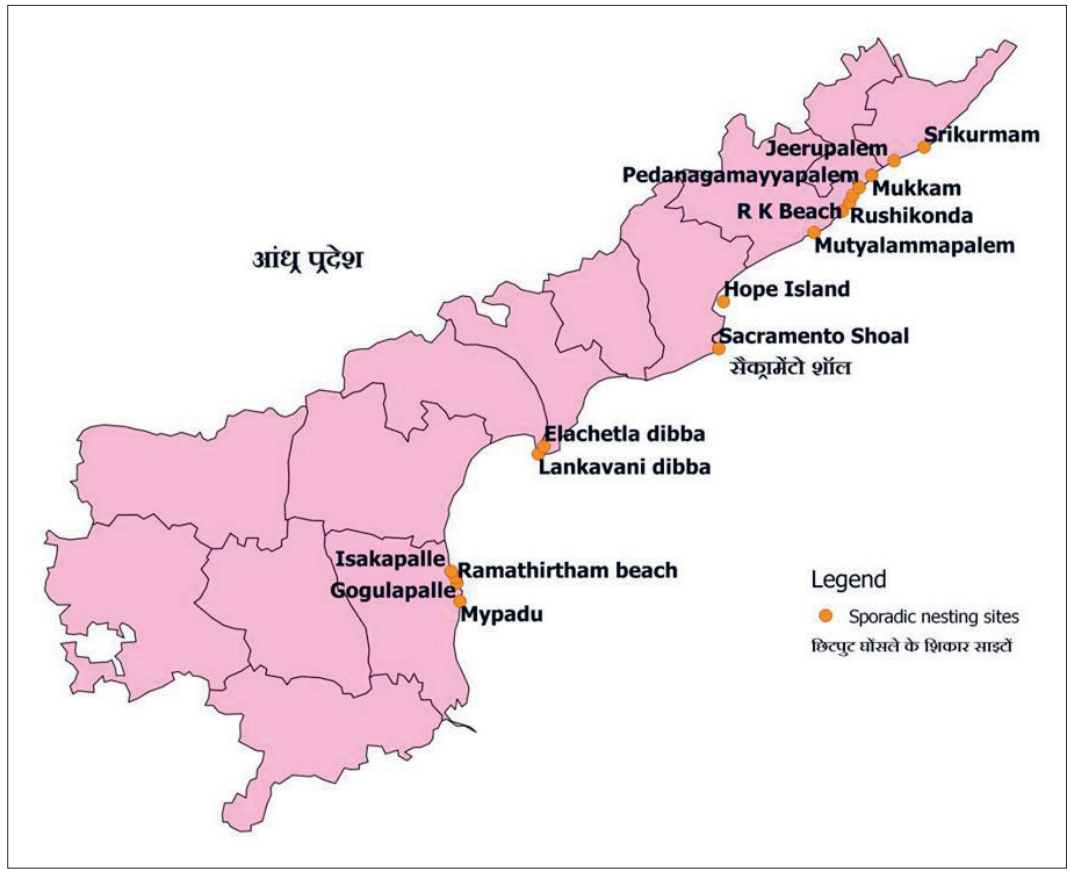

चित्र 1:- आन्ध्रा प्रदेश और नीड़न स्थान का नक्शा

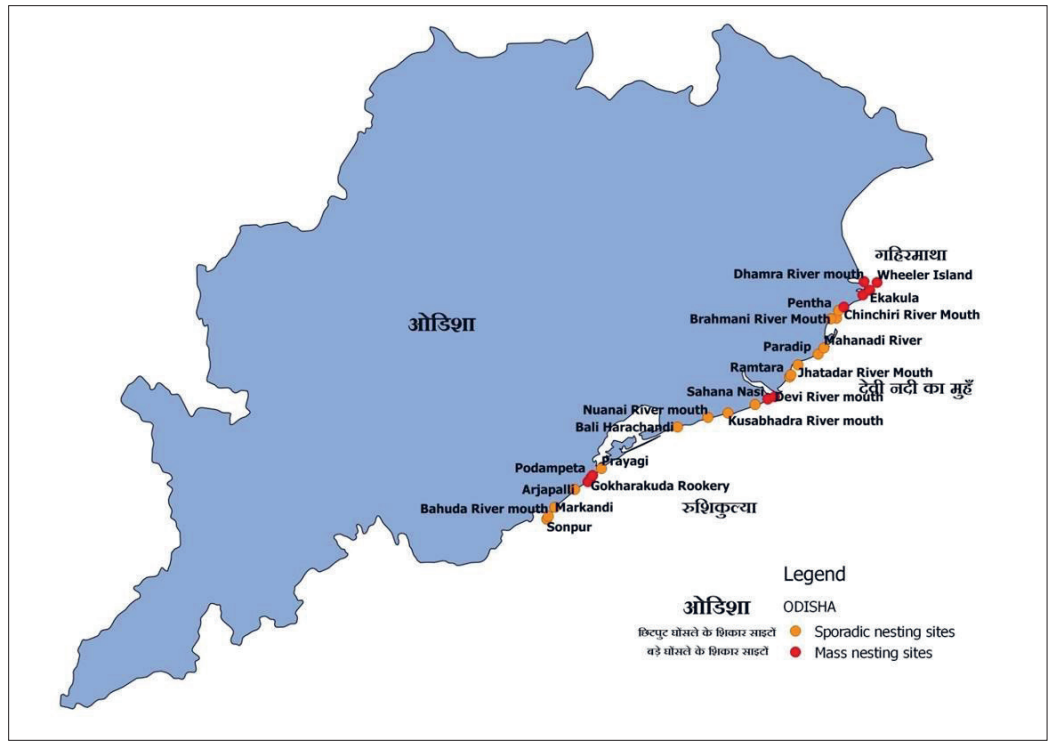

चित्र 2:- ओडीषा तट और नीड़न स्थान का नक्शा

प्रति वर्ष इनकी संख्या 50 से अधिक है, देखा गया है। साक्रोमेंटो शोल में प्रतिवर्ष 1500 से ज़्यादा स्पोराडिक नीड़न अधिक था, जो मुख्यतः दिसंबर से अप्रैल महीने तक के मौसम में था। यह तट उप वयस्क ओलिव रैडली कच्छपों, किशोरों और ग्रीन कच्छप चेलोनिया मिडास के लिए मध्यवर्ती विकासात्मक आवास के रूप में मदद कर सकता है। विशाखपट्टणम के तट पर *डेर्मोचेलिस कोरियासिया* और हैक्सबिल कच्छप *(इरेटमोचेलिस इम्ब्रिकेटा)* की अपूर्व उपस्थिति की रिपोर्ट की गयी। इस तट पर प्रजातियों के नीड़ बनाने की रिपोर्ट नहीं है।

ओड़ीषा

इस अवधि के दौरान हर वर्ष दिसंबर से अप्रैल महीने के बीच पूरे ओड़ीषा तट पर या तो व्यापक नीड़न या कहीं-कहीं नीड़न होता है। भारत के ओड़ीषा तट पर ओलिव राइडली कच्छपों (*लेपिड़ोचेलिस ओलिवेसिया*) द्वारा 'अरिबाडा' (स्पानिश में 'आगमन' माना जाता है) नाम से समकालिक व्यापक नीड़न की घटना होती है। गहिरमाता, ऋषिकुल्या और देवी नदी के मुहाने जैसे तीन स्थान व्यापक नीड़न के समुद्र तट थे। गंजम और केंद्रपदा जिलों में प्रति वर्ष 1,00,000 से अधिक कच्छपों का व्यापक नीड़न देखा गया है।

तटीय क्षेत्रों में ओलिव राइडली कच्छपों के संरक्षण के लिए दो संरक्षित स्थान हैं, जो कि गहिरमाता और भिटरकणिका (समुद्री) वन्यजीव अभयारण्य। ओड़ीषा समुद्री मत्स्यन विनियम अधिनियम के तहत ओड़ीषा के वन और मात्स्यिकी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से नीड़न अवधि के दौरान मत्स्यन पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। सरकारी संस्थाओं द्वारा वित्तीय सहायता और आजीविका समर्थन से मछुआरों को होनेवाले आर्थिक नुकसान का सहारा दिया जाता है।

पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल के तट से ओलिव राइडली कच्छपों के नीड़न की रिपोर्टें कम प्राप्त हुई हैं। परन्तु फरवरी के महीने में दिघा से गिलजाल मत्स्यन के द्वारा ओलिव राइडली कच्छप की आकस्मिक पकड़ की रिपोर्ट की गयी थी। दिघा, शंकरपुर, मंदरमोनी और जुनपुत से फरवरी से अप्रैल महीने तक के दौरान ओलिव राइडली कच्छपों के कंकाल प्राप्त हुए थे। नीड़न मौसम के दौरान आनाय जालों के द्वारा आकस्मिक रूप से कच्छपों को पकड़ने की संभावना होने के कारण आनाय जाल युक्त पोतों में कच्छप निकास उपायों (टी ई डी) का उपयोग अनिवार्य किया जाना चाहिए।

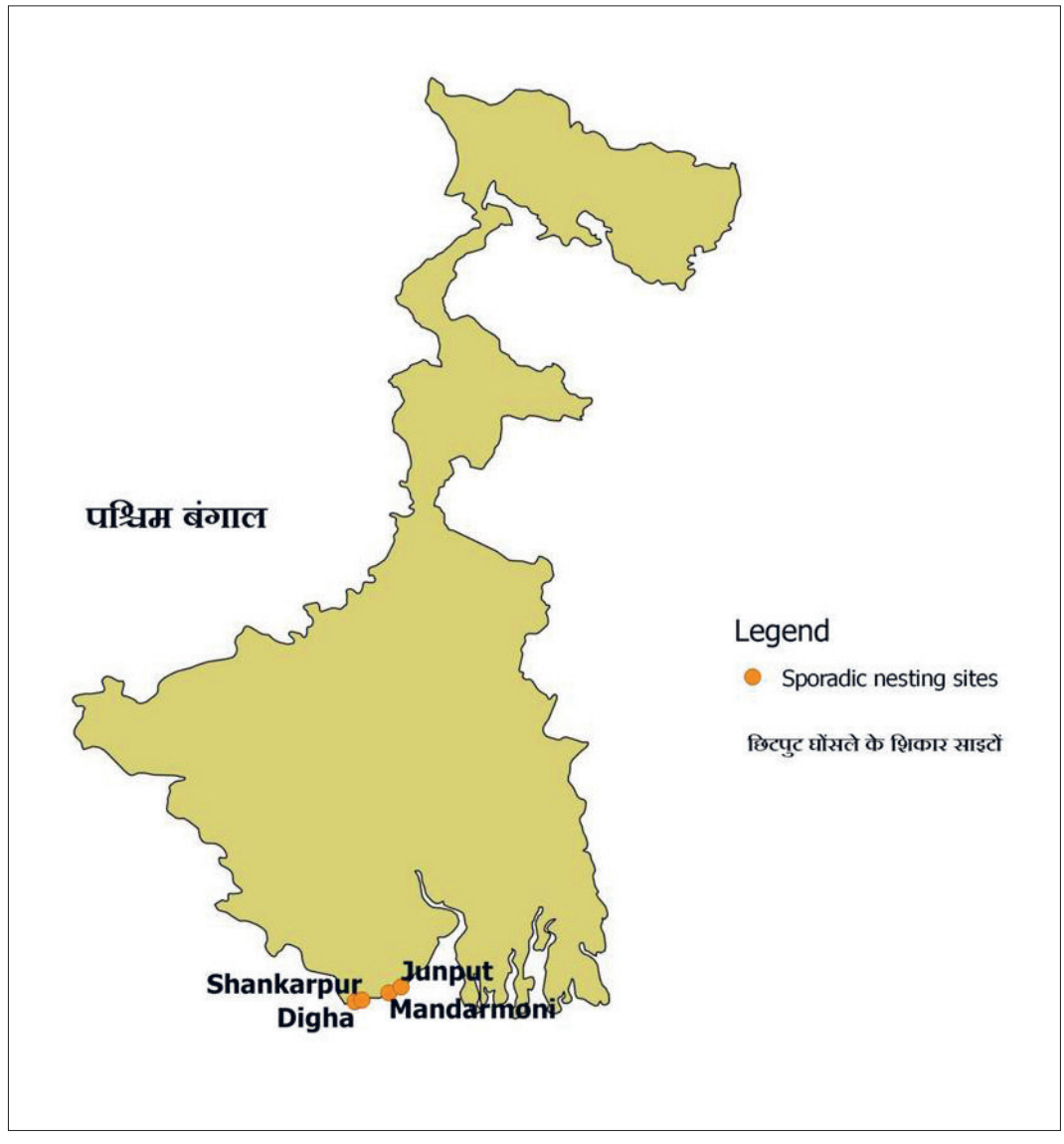

चित्र 3 :- पश्चिम बंगाल तट और नीड़न स्थान का नक्शा

सारांश

उत्तर पूर्वी समुद्र तट पर द्रुत सर्वेक्षण और पूर्व सूचना के आधार पर समुद्री कच्छपों की नीड़न गतिविधियों का आकलन किया गया। हर साल नीड़न गतिविधि की गहनता ओड़ीषा तट पर सबसे अधिक है जिसके बाद आन्ध्र प्रदेश के तट पर। पश्चिम बंगाल के समुद्री तट पर कच्छप नीड़न की रिपोर्ट बहुत कम है। आइ यु सी एन लाल सूची (आइ यु सी एन, 2010) में ओलिव राइडली कच्छपों को कमज़ोर प्रजातियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया और भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 की अनुसूची I में शामिल किया गया है। ये प्रजातियाँ एस पी ए डब्ल्यू का अनुलग्नक II (विशेष रूप से संरक्षित क्षेत्रों और वन्य जीव से संबंधित प्रोटोकॉल), सी आइ टी ई एस का परिशिष्ट I (वन्य वनस्पतियों और जीवों की लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर सम्मेलन) और प्रवासी प्रजातियों पर सम्मलेन के (बॉन कन्वेंशन) परिशिष्ट I और II में शामिल हैं। इन कमज़ोर जीवों के संरक्षण हेतु मछुआरों और सामान्य जनता को समुद्री कच्छप परिरक्षण पर जागरूकता प्रशिक्षण प्रदान करना अनिवार्य है। मछुआरों के बीच गलतफहमी को दूर करने के लिए टी ई ई डी का उचित प्रदर्शन महत्वपूर्ण है। कमज़ोर समुद्री कच्छप प्रजातियों को संरक्षित करनेवाले मछुआरों के लिए प्रोत्साहन योजनाएं घोषित की जानी चाहिए।

तालिका 1:–आन्ध्रा प्रदेश का कच्छप नीड़न कलैंडर

आन्ध्रा प्रदेश का कच्छप नीड़न कलैंडर														
	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्तूबर	नवंबर	दिसंबर	समुद्री तट का विस्तार (km)	औसत Average (nos)
मैपाडु													3	100
रामतीर्थम समुद्र तट													16	100
गोगुलपल्ले													6	100
इसकापल्ले													3	100
लंकावानी डिब्बा													6	100
इलाचेटला डिब्बा													8	300
साक्रोमेंटो शोल													3	1500
होप द्वीप													5	100
मुट्यालामापालम													3	100
आर के बीच													5	200
ऋषिकोंडा													10	200
चेपाला उप्पड़ा													10	100
पेड़ानागमायपालेम													5	100
मुक्कम													2	100
जीरुपालम													3	100
श्री कुरमाम													3	100
नीड़न मौसम / Nesting Season														
अधिकतम / Peak														

तालिका 2:–कच्छप नीड़न कलैंडर- ओडीषा

ओडीषा का कच्छप नीड़न कलैंडर														
	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्तूबर	नवंबर	दिसंबर	समुद्र तट का विस्तार (कि. मी.)	औसत (संख्या)
सोनपुर													26	100
बहुडा नदी का मुहाना														
मारकंडी														
अरजापल्ली														
ऋषिकुल्या नदी का मुहाना													6	100000
गोखराकुडा रूकेरी														
पोड़मपेटा														
प्रयागी													2	100
बाली हराचंडी													5	100
नुआनय नदी का मुहाना														

ओडीषा का कच्छप नीड़न कलैंडर

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टूबर	नवंबर	दिसंबर	समुद्र तट का विस्तार (कि. मी.)	औसत (संख्या)
कुशभद्रा नदी का मुहाना													3.5	300
केलुनी नदी का मुहाना														
सहाना नासी													10	20000
देवी नदी का मुहाना														
पद्मापुर													3	200
रामतारा														100
जठादर नदी का मुहाना													20	100
पारादीप														
महानदी नदी														
अगरनासी द्वीप													15	500
ब्राह्मणी नदी का मुहाना														500
पेंथा														1000
चिंचिरी नदी का मुहाना													35	100000
हबेलीचिंतामणिपुर														
एकाकुला														
वीलर द्वीप														
धर्मा नदी का मुहाना														
नीड़न मौसम														
अधिकतम														

तालिका 3:–कच्छप नीड़न कलैंडर–पश्चिम बंगाल

कच्छप नीड़न कलैंडर–पश्चिम बंगाल

	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितंबर	अक्टूबर	नवंबर	दिसंबर	समुद्री तट का विस्तार (कि. मी.)	औसत (संख्या)
दिघा													20	—
शंकरपुर														
मंड़ारमनी														
जुनपुत														
नीड़न मौसम														
अधिकतम														